ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

'दलित जीवन की अस्मिता के अदम्य संघर्ष की दास्तां है : हक्काई'

डॉ गोपाल लाल मीना
हिंदी विभाग
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
अलीपुर, दिल्ली-36
सम्पर्क:+919013213061
Email:glmeena08@gmail.com

प्रस्तावना

एस.आर.हरनोट की कहानी '**हक्काई**' की बात करें तो इस कहानी में पहाड़ी जीवन का एक दूसरा ही पक्ष प्रस्तुत होता है। जो पहाड़ी क्षेत्र का लोक मैदानी लोगों की नजर में बहुत ही सरल और कठोर जीवन चर्या जीवन जीने वाले पहाड़ी लोक का एक अलग ही पक्ष को उघाड़ते है । '**हक्काई**' कहानी पहाड़ी लोक में भी मानव से मानव का भेद और संसाधनों की लूट और भागीदारी में दलित उपेक्षा का नग्न यथार्थ का सत्यान्वेषण करती दिखती है । '**हक्काई**' कहानी का पात्र भागीराम भी दलित होने के कारण इसका शिकार होता है। वह किसी से भीख नहीं मांगता '**हक्काई**' **पर जूते गांठता है, मेहनत करता है और मेहनत की खाता है, 'हक्काई' उसके औजारों में एक प्रमुख है, जिससे कमाकर वह 'हक़ की कमाई' खाता है। वह उसको सबसे पहले पूजता है, उसके प्रति श्रद्धा है, वह उसके लिए उसके अस्तित्व का परिचायक है। उसकों पाने और उसके लिए उसके संघर्ष को सम्पूर्ण कहानी में बड़े कलात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है ।** कहने को तो 'भागीराम' का नाम 'भाग्य' शब्द के शब्दार्थ को ध्यान में रखकर रखा गया था, लेकिन भागीराम के जीवन में भाग्य कभी उसका साथी नही रहा । जो कि दलित जीवन का यथार्थ होता ही है ।

विषय विस्तार

कहानीकार '**हरनोट**' पहाड़ी अंचल के प्राकृतिक सौन्दर्य और जनजीवन के चितेरे तो है ही, उन्होंने दुनियाँ की नजर में पहाड़ी जीवन के प्रति सुन्दरता के दृश्यों की छवियों से अपनी विभिन्न कहानियों से रूबरू करवाया है । उनकी कहानी '**आभी**' इसका एक श्रेष्ठ नमूना है, जो बरबस ही पाठकों और श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट कर पहाड़ी भ्रमण और पर्यटन के लिए उत्प्रेरण करती है। जिससे प्रकृति और जीवों के बीच स्वछता अभियान में निरत रहनें वाली चिड़िया को ही नही पहाड़ के समस्त जीवन की छठा के दर्शन हर किसी को लाजवाब भाते है । यहाँ उनकी एक कहानी '**हक्काई**' की बात करें, तो पहाड़ी जीवन का एक दूसरा ही पक्ष प्रस्तुत होता है । जो पहाड़ी क्षेत्र मैदानी लोगों की नजर में सरल और कठोर जीवन

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

चर्या जीवन जीने वाले पहाड़ी लोक का एक अलग ही पक्ष को उघाड़ते है । '**हक्काई**' कहानी पहाड़ी लोक में भी मानव से मानव का भेद और संसाधनों की लूट और भागीदारी में दलित उपेक्षा का नग्न यथार्थ का सत्यान्वेषण करती दिखती है । '**हक्काई**' कहानी का पात्र भागीराम भी दलित होने के कारण इसका शिकार होता है । वह किसी से भीख नहीं मांगता '**हक्काई**' पर जूते गांठता है, मेहनत करता है, और मेहनत की कमाई खाता है, '**हक्काई**' उसके औजारों में एक प्रमुख है, जिससे कमाकर वह '**हक़ की कमाई**' खाता है । वह उसको सबसे पहले पूजता है, उसके प्रति श्रद्धा है, उसके लिए उसके अस्तित्व का परिचायक है । उसकों पाने और उसके लिए उसके संघर्ष को सम्पूर्ण कहानी में बड़े कलात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है । कहने को तो भागीराम का नाम 'भाग्य' के शब्दार्थ को ध्यान में रखकर रखा गया था, लेकिन भागीराम के जीवन में भाग्य कभी उसका साथी नही रहा । कहानीकार ने कहानी के केन्द्रीय पात्र के साथ घटनाओं और पात्रों के साथ सह-पात्रों की योजना को इस प्रकार से गठन किया है, कि कहानी कला में **हरनोट** की कहानियाँ श्रेष्ठतम कहानीकारों की श्रंखला में अपने आप स्थापित हो जाती है । कहानी के केन्द्रीय पात्र 'भागीराम' के इर्द-गिर्द ही कहानी का सम्पूर्ण कलेवर विकास की और आगे बढ़ता है, साथ ही बहुत विस्तार से बहुत बड़ा है । इसीलिए भागीराम जो एक जाति और कर्म से बूटगठिया है, उसी के सम्पूर्ण जीवन को कथा सिलसिले वार है, इसमें उसके बचपन से लेकर उसके वृद्धावस्था तक समझा जा सकता है । उसका परिवार एक कुशल चर्मकार और चमड़े से निर्मित सामानों का कारीगरी से सम्बन्ध रखता था । अंग्रेजी राज तक बहुत बड़ा चमड़े का कारखाना था और घर की माली-हालत अच्छी खासी थी । लेकिन भागीराम अपने बचपन में अपने गाँव से अपने चाचा के साथ अपनी जान बचाकर भागकर दूसरे शहर आ जाता है, तो भी उसका दलित्त्व उसका पीछा नही छोड़ता ।

इस वेदना को कहानी के उत्कर्ष तक जाने का यथोचित उपक्रम है । भागी राम का परिवार अपने चमड़े की कारीगरी के कारण खूब सम्पन्न था । उनके पुरखों से चमड़े का काम पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा था । उसके दादा इस काम में बहुत कुशल थे । उनकी इस कुशलता और लगन के कारण उन्होंने एक कारखाना भी खोल लिया था, जिसमें अनेकों लोगों को रोजगार भी मिलता था और उनके परिवार की माली-हालत भी अच्छी-खासी थी । स्वयं अपने बचपन की याद भागीराम करता है । -"उसे अपना बचपन याद आने लगा था । अपने पुरखों की सम्पन्नता स्मरण होने लगी थी । अपने दादा के ठाट-बाट याद आने लगे थे । उनकी जमींदारी स्मरण होने लगी थी...एक समय था जब उसका गाँव और वहां रहने वाले लोग, उसका अपना परिवार बान के जंगलों की तरह हरा-भरा था । एक नीच जात होते हुए भी उनका डंका अंग्रेजी हुकूमत में बजता था । दिल्ली के दरबार तक उसके बाप-दादा के बनाए बूट और गुरगाबियाँ जाती । अंग्रेजी लाट दूर-दूर से घोड़ो पर वहां आते ।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

अपने लिए और अपने पुरे परिवार के लिए बूट, चप्पले और सैंडल बनवाते. घोड़ों की जीनें वहीँ बनती । पिस्टलों के बैल्ट वहीँ बनते । लम्बे-छोटे चाबुक भी अंग्रेज उन्हीं से बनवाते । चमड़े का ऐसा धंधा की बड़े-बड़े भी दंग रह जाए । कितने लोगों को रोजगार देता था भागीराम का परिवार ।"[1] इस तरह भागी का परिवार चमड़े के कारखाने से सम्पन्न और खाता पिता परिवार था । अच्छे दिनों में खुशहाली में पैदा भागी के बचपन में कोई कमी नहीं थी, बहुत बड़ा कारखाना और बहुत से लोग कम करने के साथ जमीन से भी अच्छी पैदावार होने से अच्छे दिन थे । इसीलिए भागीराम अपने बचपन में "भागीराम उन दिनों भागू के नाम से जाना जाता था । जब वह जन्मा था तो उसके ग्रह इतने अच्छे थे कि उसका नाम राशि से नहीं, भाग्य से रखा गया-'**भाग्यराम**' । उसके दादा चाहते कि उसका नाम किसी भगवान के नाम पर रखे लेकिन वह अपनी सीमाएं जानते थे । अब वे ब्राह्मण-ठाकुर तो थे नहीं कि बच्चे का नाम शंकर, कृषणचंद, रामनाथ, गणेशदत्त, देवीप्रसाद, देवेन्द्र, सूर्यप्रकाश आदि-आदि रखते, इसलिए सोचा भाग्य से ही ठीक रहेगा । पर बाद में वह भागीराम हो गया बोलने-लिखने में आसान ।"[2] इस तरह दलित चाहे कितने भी आर्थिक सबल हों जाए उनकी स्वीकार्यता सम्पन्नता से नहीं उसकी जातीयता की पहचान उसके साथ हमेशा बनी रहती है । "चमड़े के धंधे के साथ-साथ उनकी जमींदारी भी खूब थी । वह ऐसा गाँव था जो नदी के किनारे बसा था । इसीलिए पानी की कमी नहीं थी । मिट्टी उर्वर थी, जैसी चाहे फसल उगा लो । वे लोग मौसमी फसलें और सब्जियां तो लेते ही थे लेकिन उनके क्यारों में पील-मोटा चावल बहुत होता था जिसकी बहुत मांग थी । वह महंगा भी बिकता था । कई रियासतों से उस चावल की मांग होती थी. अंग्रेजी हुकूमतके बहुत से लोग भी उस चावल को पसंद करते थे । इसीलिए भी दूर-पास के कई ऊँची-जात के लोगों की नजरें उस गाँव पर थी । औरतें जहाँ खेती में कड़ी मेहनत करती थी, वहीं हर घर में पांच से दस तक पहाड़ी गाएं और भैसे पलती थी । इसीलिए दूध-घी की कोई कमी नही थी । उस गाँव का घी भी दूर-दूर तक बिकने जाता था । यह भी उन घरों की आमदनी का अतिरिक्त साधन था ।"[3] इसका मतलब यह लिया जा सकता है कि यह सब तब था, जब अंग्रेजी शासन था । अंग्रेजी राज में वे (अंग्रेज) लोग काम को महत्व जाति से अधिक देते थे, इसीलिए उनके कारखाने की बनी चीजे वे पसंद भी करते थे । उनके कारखाने की बारीक और महीन कारीगरी के वे पारखी थे । इस वजह से उनको दूर-दूर से आर्डर मिलते थे । इससे परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी थी । "इस देश में श्रम जाति की मेघा को सम्मान नही मिल पाता । जिसनें ताजमहल बनाया है । उस शिल्पी का स्थान उच्च वर्ण में नहीं है । लोहार, कुम्हार, स्वर्णकार, कारीगर किसान-जो भारत के प्रथम वैज्ञानिक, गवेषक, आविष्कारक है-वे इस देश में सम्मान प्राप्त नहीं करते है-सम्मान प्राप्त करते है, स्वर्ग लोक के झूठे प्रचारक-प्रताड़क लोग ।"[4] इस तरह इस देश में श्रम और कामों की कुशलता की कद्र नहीं होती । एक निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति क्यों कर रहन-सहन में बराबरी

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

करे । गैर–बराबरी वाले देश में इस को यथावत रखने वाले, लोग दूसरे के श्रम पर पलने वाले लोग, श्रम और उसकी कुशलता को कभी सम्मान से नहीं देखते । और भागी राम के परिवार की स्थिति भी कुछ अपनी सामाजिक स्थिति से ऊपर उठे यह किरकिरी वाली बात तो थी ही । लेकिन "आजादी के बाद भागी चमड़े के इस काम को काफी समझने लगा था, लेकिन उसके देखते–ही–देखते कई घटनाएँ घटी जिन्हें याद करके वह आज भी दहल जाता है । शहरों से गाँव तक दंगे शुरू हो गए थे । एक दिन तो उसनें कई लोगों को वहाँ आकर उत्पात मचाते देखा था जो दादा से इस बात पर बहस रहे थे कि उनके कारीगरों में मुसलमान है । दादा ने उन्हें जैसे–कैसे समझा–बुझाकर भेजा था । भागी को समझाते हुए दादा ने यह बताया था कि पूछताछ करने वाले लोग बड़ी जात के लोग है । उन दिनों भागी के लिए जात–पांत के कोई मायने नहीं थे । वह हिन्दू–मुसलमान नहीं जानता था । न ही सिक्ख या ईसाई की परख थी । उसके लिए ठाकुर–ब्राह्मण या हरिजन सभी आदमी एक जैसे लगते थे । वह यह नहीं जानता था कि ये दंगे किसलिए हो रहे थे । उसके बाल–मन में एक दहशत जरुर घर कर गई थी ।"[5] भागी के परिवार की एक तो गलती यह कि उनका खाते–पीते परिवार था और उनके कारखाने में काम करने वाले कारीगरों में कुछ मुसलमान कारीगर थे । उनकी जमीने भी उपजाऊ थी और सही मौके पर थी ऐसे में उन्हें उजाड़कर कुछ लोग वहां कब्जा करना चाहते थे । ऐसी स्थिति में दलितों की सम्पत्ति और दलित आसान तो होते ही है । इसीलिए –"यही कारण था कि भागी के गाँव पर उनकी बुरी नजरें टिक गई थी । उनका कारोबार भी उनकी आँख की किरकिरी बन गया था । वे इस ताक में थे कि कब इस बढते कारोबार को तहस–नहस किया जाए ।"[6] साम्प्रदायिकता के नाम पर दंगे–फसाद करके, हिन्दू–मुसलमान के नाम से अच्छा बहाना तो था । चाहे कुछ भी हो लेकिन साम्प्रदायिकता के नाम पर दो धर्मों के लोग तो प्रभावित होते ही है, उनमें सबसे अधिक प्रभावित होते तो दलित ही है । वही भागी के गाँव और परिवार के साथ भी होना ही था । क्योंकि दलितों का दमन करने के लिए धर्म सबसे आसान हथियार है । जिसे दलितों की बुद्धि समझे उससे पहले तो निहितार्थ पूरे भी कर लिए जाते है । हालाँकि "इस साजिश में भी गाँव के दबंगई सवर्ण शामिल थे, इसीलिए कभी किसी को यह पता न चला कि यह एक सोची–समझी चाल थी । हर जगह यही बात फैलाई गई कि यह एक कुदरती हादसा था, जिसमें पूरे का पूरा गाँव तबाह हो गया । दबंगइयो ने यह पूरा ख्याल रखा था कि उस रात कोई बचा न रह पाए । हालाँकि भागी और उसके चाचा भागने में कामयाब हो गये थे, लेकिन उन्हें डर था कि यदि उनके जीवित होने का पता चला तो वे भी मार दिए जाएंगे । भागी और उसके चाचा भूखे–प्यासे कितने दिनों तक जगह–जगह भटकते रहे थे ।"[7] इस तरह के हादसे केवल भागीराम के गाँव में ही नही होते । यह लगभग सारे देश में देखा जा सकता है । और फिर इस तरह के हादसे होने के बाद ये लोग करे भी तो क्या ? न तो समझ है, न सम्पन्न है, न संगठित है, न शासन–प्रशासन में पकड़ है । अंततः ये हादसे

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

बनकर अतीत की स्मृतियों का दंश बनकर कुछ लोगों के जहन में ही जीते रहते है। अन्य लोगों को उससे क्या ? यही सच है हमारे समाज का ...! इस पर यदि विधिवेत्ता श्री अरविन्द जैन की माने तो वे लिखते है कि –"निर्धन, अशिक्षित, भूमिहीन और सामाजिक आर्थिक विषमताओं के शिकार दलितों पर हर घंटे दो हिंषक हमले, हर दिन तीन दलित औरतों के साथ बलात्कार, दो दलितों की हत्या, और दो दलित घरों में आग लगा दी जाती है। कानून कितने लोगों को सजा सुनाता है (सुना पाता है) कितने अपराध संदेह से परे सिद्ध होते (हो पाते) है। .....माई लॉर्ड्स, ससम्मान अपनी असहमति के लिए विवश हूँ। चुप रहना सुविधाजनक हो सकता है, मगर बेहद खतरनाक भी।"[8] आखिर कौन सुनता है इनकी न पुलिस और न ही अदालते। वे सिर्फ जब अपराधी की जाति और हैसियत से ही गुहार सुनती है। जब उनके दादा को मार दिया गया और पुरे गाँव को आग लगा दी गई। तब उसके चाचा जैसे-तैसे उसको बचाकर गाँव छोड़कर भाग जाते है, लेकिन उनकी जाति उनका पीछा नहीं छोडती। वे अपनी जाति छुपाते भी नहीं है। क्योंकि नहीं जानते वे झूंठ बोलना भी क्योंकि- "वे सच्चे-पक्के भी थे इसलिए जिस गाँव या घर जाते वहाँ अपनी जात बता देते और इस वजह से उन्हें कोई न गाँव में रहने देता और न घर के भीतर घुसने देता। न जाने कितनी रातें उन्होंने जंगलों और खेतों में काटी थी। जैसे-कैसे कई दिनों पैदल चलने के बाद वे एक ऐसे शहर पहुँचे थे, जो अभी बसने लगा था।"[9] भागी के चाचा की मौत आने पर भागी अकेला पड़ गया। उसे अपने गाँव की याद आती है तो वह जाकर उसे देखने जाता भी है पर वहां तो स्थिति कुछ और ही है –"वहाँ पहुंचा तो देखकर दंग रह गया कि वह गाँव अब एक छोटे शहर में तब्दील हो गया था। खेतों की जगह कंकरीट के बेशुमार मकान उग आए थे। अनगिनत दुकानें थी, छोटे-मोटे कारखाने थे। स्कूल-कॉलेज थे। नदी किनारे इंटों की बड़ी भट्टियाँ थी। जहाँ दादा का कमाईघर होता था, वहां एक भव्य राम-सीता मन्दिर बन गया था। उसे कोई पहचानता नहीं था, इसलिए वह देर तक अपनी स्मृतियां उस शहर की गलियों और मुहल्लों से बांटता रहा था।"[10] यहाँ आकर अपनी जगह को वह बचाना भी चाहता है। लेकिन उसके सामने नई परिस्थितियाँ है, और वह अपने ही गाँव में गाँव के लोगों के लिए अनजान भी। "भागीराम अपनी जगह को हर हालत में बचाना चाहता था इसलिए वह हर मुसीबत से लड़ता रहा। इधर-उधर अर्जियाँ देता रहा और अपनी व्यथा सुनाता रहा। अपने बचाव में उसने अपनी जाति का सहारा अवश्य लिया था। इस कारण उसकी वह जगह तो बच गई, पर आस-पड़ोसियों की दबंगई से तंग आकर उसने वहां काम करना बंद कर दिया और शहर के एक बड़े चर्च के साथ लगती सड़क के किनारे बैठना शुरू कर दिया।"[11] सब तरह कोशिश करने के बाद आखिर में वह थक-हारकर इस तरह बैठ जाता है-"अतीत में खोया वह कई घंटों बेसुध-सा पड़ा रहा। जब आँख खुली तो सूरज पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे बादलों के बीच से नीचे उतर रहा था। वह कुछ देर उसी तरह बैठा रहा। यही सोचकर कि भगवान उसकी कितनी

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

परीक्षाएं लेगा ! उसके घर में कहीं कोई इन्साफ है भी या नहीं ! यह सोचते-सोचते जैसे ही उठा तो अचानक नगर-निगम की तरफ से उसी अफसर के ऊपर नज़र गई जिसकी वजह से उसे ये दिन देखने पड़ रहे थे । साथ दो-तीन चमचे भी थे । एक मन किया कि सामने जाकर उसका गला घोट दे, पर मन मारकर रह गया था । आज पहली बार उसके चहरे को ध्यान से देखा था ।"[12] आखिर में वह अपने काम को लौटकर आ जाता है तो उसके लिए यहाँ भी नई मुसीबते खड़ी हो जाती है । इसीलिए कहा जाता है कि दलित को अपने गाँव में भी और बाहर भी पग-पग पर चुनौतियों से ही जूझना है । यहाँ जहाँ वह ठिया लगाकर बूट गांठता था । नगर-निगम के दफ्तर में एक घोर कट्टर जातिवादी और नीच जाति के लोगों के प्रति हिकारत वाला अफसर आ गया । इस अफसर का यदि चरित्र और व्यवहार देखा जाए तो वह बड़ा ही धार्मिक और पाखंडी व्यक्ति था । जिसका न कोई चरित्र था और न ही कोई व्यवहार था । मौका परस्ती में और कंजूसी में तो वह एक नम्बर था जैसे- "उस अफसर को जगराते करवाने का बड़ा शौक था । हर साल वह अपने घर में जगराता करवाता । उसके लिए शायद ही कभी अपने घर या जेब से पैसे खर्च किए हो । अब जिस महकमें में जाता, उससे कोई न कोई काम-धंधा करने वाले तो जुड़े रहते । जगराता उन्ही के सिर होता.....कंजूस इतना था कि विपक्षी पार्टी के रह चुके मुख्यमंत्री और उनके साथ खिंचवाई अपनी तस्वीरें उन्हीं चित्रों के पीछे मढ़ाई होती । जब सरकारे बदले तो नई तस्वीरें बनवाने की जरुरत न पड़े, बस फोटुएं ही उल्टी कर दी जाएं ।"[13] इस तरह वह अफसर था पर उसके लिए उसकी जातीय श्रेष्ठता और उसका दंभ भागी के समस्या बन गई । "उस अफ़सर को नगर-निगम में आए ज्यादा समय नहीं हुआ था कि भागीराम पर आफत टूट पड़ी थी । माजरा यह था कि अफसर की गाडी चर्च के पीछे पार्किंग में खड़ी होती और जैसे ही वह उतरता, सामने भागीराम का ठिया नजर आता । इस तरह के लोगों से वह बहुत नफरत किया करता था । भागीराम अपने ध्यान में किसी के बूट पालिश करता रहता तो उल्टे बूट का तला उस साहब की आँखों में खटक जाता ।"[14] नगर-निगम के अफसर की हैसियत से सारे नगर उसकी सल्तनत तो वह मानता ही था । वह एक दिन भागी के पास बूट पोलिस करवाने आता है । भागीराम उससे पैसे मांगता है । बस ! साहब के अहम पर भारी पड़ गया । "भागीराम ने कभी सोचा भी नहीं था कि बूट पालिश के पैसे मांगना इतना महंगा पड़ जाएगा ।"[15] साहब को बहुत बुरा लगा और भागी पर बिखर पड़ा । उसने सड़क पर बूट-गांठने, पोलिस करने वाले की इस खता का बदला लेने के लिए निगम का दस्ता भेज दिया । निगम के दस्ते ने भागी के सामन को उठा लिया और जब्त करके ले गये । अब मुसीबत भागी के लिए यह थी कि एक कारीगर बिना हथियारों के काम कैसे करे? उसके हथियार ही उसकी जीविका है और वे ही उसकी अस्मिता है । विशेषकर 'हक्काई' को तो वह पूजता है । "*भागी के किए यह गरीबी में आटा गीला जैसा था । उसने झटपट बिखरे बचे सामान को संभाला और इकट्ठा करके एक*

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

लिफाफे में डालकर बांध दिया । अब 'हक्काई' का ख्याल आया तो जैसे काठ मार गया । उसने गुस्से में अपने सर के बाल कई बार नोंचे कि उससे यह गलती कैसे हो गई । उसने वह कही छुपा क्यों नहीं दी ! उसे फ़िक्र अपनी लोहे की 'हक्काई' का था, जिस पर वह दिनभर बूट-गांठता, टांकता, कीलें ठोंकता और मुरम्मत करता था । वही उसकी रोजी-रोटी थी । वह जब अपनी जगह पर पहुंचकर अपना अड्डा जमाता तो सबसे पहले बक्से के साथ 'हक्काई' को इतने मान से रखता जैसे वह लोहे की त्रिभुज नहीं, त्रिदेव की प्रतिमा हो । उसके साथ कठौत रखकर प्लास्टिक की बोतल से उस पर पानी उड़ेल देता । पानी के छीटें 'हक्काई' पर भी मारता और उसे एक कपडे से अच्छी तरह साफ करके कुछ बडबडाते हुए माथा टेकता । किसी जूते गांठते-गांठते वह उसके बखान भी करने लगता कि यह हमारी रोजी है.....साथी है ....दोस्त है ....हक की कमाई खिलाती है । कितना ही छोटा या बड़ा कारीगर क्यों न हो, यह सबके साथ होती है...बिना इसके तो हम एक कील नहीं ठोंक सकते....I" [16] जब उस अफसर ने भागीराम के खिलाफ पुलिस में झूंठा मुकदमा दर्ज कर उसे बंद करवाने की कोशिश की, तो पुलिस अफसर जांच में भागी को सच्चा और सीधा पाती है । वों एक महिला अधिकारी थी, जो भागीराम की भावुक कहानी को सुनकर भावुक भी हो जाती है और उसे थाणे से छोड़ देती है । जो उसके जहन में थानों और पुलिस के प्रति जो छवि थी वों भी सच में कुछ अलग ही बनती है । "उसे सचमुच विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह एक ऐसी बड़े दिल वाली मैडम थानेदार से मिलकर आ रहा है जिसने उसे कई बार 'आप' कहा । अपने सामने कुर्सी पर बिठाया । चाय पिलाई, प्यार से बात की । पुलसिया बर्ताव नहीं किया । पुलसिया रौब नहीं झाडा । माँ-बहन नहीं की । उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई थानेदार इतना अच्छा भी हो सकता है । पुलिस महकमे के खिलाफ जो उसके मन में बरसों से अनेकों भ्रम और उनके अत्याचारी चेहरे घुसे हुए थे, वे अचानक आज टूटते नजर आए कि हर-जगह, हर-आदमी या अफसर एक जैसे नहीं होते । यह सोचते सीढियाँ चढ़ते उसकी आँखों के सामने महात्मा गाँधी की तस्वीर उमड़ आई थी, अब वह जैसे उस तस्वीर के सहारे-सहारे ऊपर चढ़ने लगा था ।"[17] यहाँ भागी को थाने में थानेदार की कुर्सी के ठीक ऊपर महात्मा गाँधी और बाबा साहब अम्बेडकर की तस्वीर देखने के बाद ताकतवर से लड़ने का आसान तरीका मिल जाता है । और वह समझ जाता है कि ताकतवर को झुकाया जा सकता है तो वह मात्र एक ही रास्ता है- "गांधीगिरी" और 'सत्याग्रह' और संघर्ष की प्रेरणा और साहस मिलती है-बाबा साहब डॉ अम्बेडकर से फिर वह जो करता है- "दूसरे दिन चर्च के साथ लगी महात्मा गाँधी की विशाल प्रतिमा के नीचे का मंजर देखने वाला था । वहां एक बड़ा सा बैनर टंगा था, लिखा था-

"भागीराम की नगर निगम के अफसर और बाबुओं के अत्याचार

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

के विरुद्ध अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल ı
आज शहर के पैरों के बूट मुफ्त पोलिस किए जाएंगे ı”[18]

उपसंहार–

‘**हक्काई**’ कहानी में कहानीकार हरनौट ने कहानी कला को कहानी के केन्द्रीय पात्र के इर्द-गिर्द ही विकसित करने की कोशिश की है ı लेकिन फिर भी केन्द्रीय पात्र ‘भागी’ से सम्बन्धित समस्त दृश्यों और घटनाओं को समेटने के कारण कहानी का कलेवर थोडा बड़ा जरुर हो गया है ı फिर भी कहानी का पाठक कभी नीरस नहीं हो सकता ı कहानी के पात्रों की योजना और दृश्यों के कारण कहानी में जीवन्तता तो बनती ही है ı इससे पाठक की उत्सुकता और बढती जाती है, जो एक बार की बैठक के बाद लम्बी होने पर भी पूर्ण करके ही उठता है ı कहानी में संवेदना के स्तर पर एक बहुत बड़े वर्ग की समस्या को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है ı कहानी के मुख्य पात्र ‘भागीराम’ जैसे न जाने कितने ही पात्र है, इस देश में जो इस प्रकार की विपदा की जिन्दगी जीते है ı उनका जीवन यथावत ऐसा ही है, जैसा भागीराम का जीवन है ı इस कहानी के द्वारा सहज और सरल भाषा में एक बहुत बड़े वर्ग के जीवन के सत्य और तथ्य का भी नग्न रूप में चित्रण हुआ है ı भारतीय समाज के दलित जीवन को तो कमोबेश ऐसी स्थितियों से कई बार गुजरना ही पड़ा है ı इसके माध्यम से खासकर दलितों के जीवन के लिए स्वतंत्र-भारत और उसको देखे गये स्वप्न भी यथार्थ रूप से खंडित दिखते है ı सार रूप में यह कहा जा सकता है कि विकास के नाम पर विस्थापन के लिए दलित, पिछड़े, आदिवासी ही सबसे अधिक प्रभावित होता है ı इस कहानी ‘**हक्काई**’ के ‘भागी’ जैसे न जाने कितने भागीराम अपनी जड़ों से विस्थापित और उखड़े हुए है जिसकी सम्पूर्ण दास्ताँ यह कहानी प्रस्तुत करती है ı

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

सन्दर्भ सूची :

[1] लिटन ब्लॉक गिर रहा है-एस. आर हरनोट, कहानी-'हक़ाई' पृष्ठ संख्या-22
[2] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-23
[3] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-25
[4] दलित साहित्य पर एक विमर्श : नितीश विश्वास वसुधा अंक -58 पृष्ठ सं-374
[5] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-26
[6] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-26
[7] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-27
[8] वसुधा अंक-58 'अछूत की शिकायत सुनेगा कौन ? अरविन्द जैन पृष्ठ सं-81
[9] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-27
[10] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-27-28
[11] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-28
[12] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-28
[13] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-29
[14] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-30
[15] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-31
[16] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-33
[17] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-39
[18] उपर्युक्त ----पृष्ठ संख्या-39